आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

दैनिक समाचार–पत्र

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2304 • उदयपुर, गुरुवार 15 अप्रेल, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

समाचार–जगत्
सकारात्मक व जनहितार्थ खबरें

साल का सबसे बड़ा धूमकेतु गुजरा, अब 2052 में लौटेगा

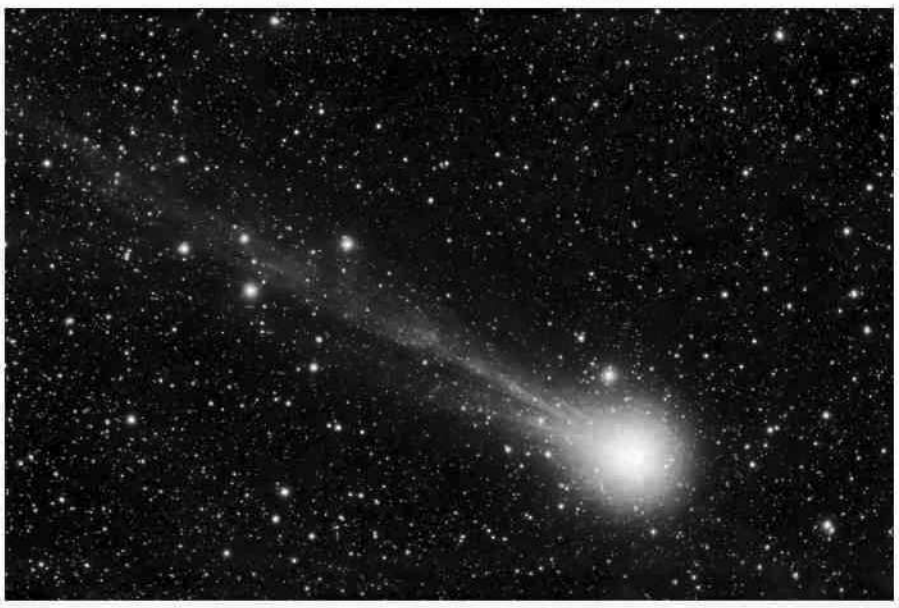

धरती के पास से इस साल का सबसे बड़ा धूमकेतु (एस्टेरॉयड) रविवार 21 मार्च 2021 रात गुजर गया। इसे पृथ्वी को किसी तरह का नुकसान नहीं पहुंचा। अमरीका अंतरिक्ष एजेंसी नासा के मुताबिक यह एस्टेरॉयड एफिल टावर से तीन गुना बड़ा है। यह पृथ्वी से करीब 20 लाख किमी की दूरी पर 34.4 किमी प्रति सेंकड की रफ्तार से गुजरा। इसका नाम 2001 एफओ–32 रखा गया है।

नासा ने बताया कि इस धूमकेतु का व्यास करीब 900 मीटर है। बताया गया है कि यह पृथ्वी से करीब से गुजरा तो चमकता हुआ दिखाई दिया। यह अब 2052 में फिर पृथ्वी के निकट आएगा।

20 साल से थी नजर

वैज्ञानिकों के अनुसार धूमकेतु की खोज 20 साल पहले कर ली गई थी। तब से वे इस पर वैज्ञानिक नजर बनाए हुए थे।

69 देशों को वैक्सीन की 583 लाख डोज भेज चुका भारत

कोरोना की लड़ाई में जहां भारत को विकसित देशों की अपेक्षा बेहद कमजोर समझा जा रहा था, लेकिन भारत से न सिर्फ कोरोना संक्रमण पर काबू पाया, रिकवरी रेट भी दुनिया में बेहतर रहा। इसके बाद वैक्सीन डिप्लोमेसी नीति के तहत 21मार्च तक पड़ोसियों समेत दुनिया के 69 देशों को 583 लाख वैक्सीन भेज चुका है। इस मामले में चीन, अमरीका, ब्रिटेन, जापान जैसे देश बहुत पीछे रह गए। पड़ोसी देशों पर चीन के बढ़ते प्रभाव को रोकने के लिए कूटनीति के तहत भारत ने मुफ्त में 79.5 लाख वैक्सीन भेजी।

- 20 नई वैक्सीन पर अभी काम किया जा रहा है, कई दूसरे व तीसरे चरण में।
- 5–6 माह में अधिकांश वैक्सीन अप्रूवल के साथ लगने के लिए उपलब्ध होगी।
- 150 से अधिक देशों को भारत हाइड्रोक्सीक्लोरेक्वीन का निर्यात कर चुका।

तीन फायदे–

- चीन की सेलिंग और इकोनॉमिकल पॉलिसी को ध्वस्त करने में सफल।
- चीन–अमरीका से बेहतर बताने के लिए तेल उत्पादक देशों को मदद।
- दुनिया को मेक इन इंडिया यानी भारत का संदेश, हर तरफ सराहना।

सेवा–जगत्
दिव्यांगों की सेवा में, आपकी नारायण सेवा

एक वर्ष की चिकित्सा के बाद चला मोहित

बांका (बिहार) के गांव कर्मा निवासी राजीव कुमार सिंह के घर 26 जुलाई 2018 को दूसरी संतान का जन्म शल्य चिकित्सा से हुआ। जन्म के 6–7 माह बाद माता–पिता को पता लगा कि मोहित के दोनों पांवों में कमजोरी और टेढ़ापन है। यह देख वे चिंताग्रस्त हो गए। तभी उनके किसी मित्र ने बताया कि अपने बच्चे का इलाज उन्होंने भी नारायण सेवा संस्थान में कराया जिससे वो अब आसानी से चलने लगा है। इस जानकारी के बाद मोहित के माता– पिता भी बिना वक्त गंवाए मार्च 2019 में उदयपुर आए।

संस्थान की डॉक्टर्स टीम ने जांच की। बच्चे को जन्मजात क्लब फुट डिफोरमेटी रोग बनाया और कहा कि 2 वर्ष तक इलाज चलेगा। फिर शुरू हुआ इलाज का दौर जिसके तहत 3 बार प्लास्टर चढ़ाया गया। दोनों पांव का एक–एक ऑपरेशन हुआ। उसके बाद 2 बार फिर प्लास्टर चढ़ाए और 3 बार अलग– अलग तरह के जूते पहनाकर उसे चलाया। मोहित के पांव अब सीधे हो गए है। वो दौड़ने भी लगा है। पूरा परिवार उसे चलता देख बहुत खुश है।

उमेश की दो साल से रुकी जिन्दगी शुरु

चोरी–चोरा, गोरखपुर (यू.पी.) निवासी 27 वर्षीय उमेश कुमार राजभर करीब 2 साल पहले एक रेल दुर्घटना के शिकार हो गए। दुर्घटना का जिक्र करते हुए वे रूंधे गले से बताते हैं कि मां–पिता की मौत तो मेरे लड़कपन में हो गई थी। खैर ईश्वर की मर्जी के आगे किसी की नहीं चलती। भाभी और भाई ने मुझे बड़ा कर किया। परिवार की मदद के लिए लोहे के कारखाने में मजदूरी करने लगा। घरवालों से मिलने के लिए गांव जा रहा था कि चलती ट्रेन में चढ़ते वक्त गिर पड़ा। मुझे तो कुछ सुध नहीं रही बांया पांव पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया था। किसी ने मुझे हॉस्पीटल पहुंचाया। वहां करीब 1 माह तक इलाज चला जिसके दौरान घुटने के नीचे से पांव काटना पड़ा। कल तक दौड़ रही जिन्दगी एकाएक थम गई। बेड पर बैठे रहने के सिवा कुछ भी नहीं कर सकता। कुछ दिन पहले किसी परिचित ने नारायण सेवा संस्थान की जानकारी दी तो में उदयपुर पहुंचा। संस्थान की प्रोस्थेटिक टीम ने कटे पांव का मेजरमेंट लिया और कृत्रिम पांव लगा दिया। अब मैं अपने पांवों पर चलने लगा हूं। मै इतना खुश हूं कि कह नहीं पा रहा .... बस इतना ही कहूंगा कि मेरी जिन्दगी रूक गई थी जिसे फिर से शुरू करने वाली नारायण सेवा संस्थान और इनके डॉक्टर्स व टीम को बहुत धन्यवाद... आपने कृत्रिम अंग का मुझे उपहार दिया है ... मैं इसके लिए बहुत आभारी रहूंगा....

जैसा करोगे : वैसा भरोगे

किसी परिवार में एक व्यक्ति के चार बेटे और चार बहुएं थीं। पिता वृद्ध और लाचार हो गया तो उसकी उपेक्षा होने लगी। बेटों और बहुओं को उसकी सेवा भारी लगने लगी। चारों भाइयों ने मिलकर विचार किया और वृद्ध पिता को पशुओं के बाड़े में डाल दिया। उसे एक टोकर दे दिया यह कह कर कि भूख लगे तो उसे बजा दिया करो, भोजन भिजवा दिया जाएगा।

पशुओं के बाड़े में पड़ा, वृद्ध पिता अपनी असमर्थता पर आंसू बहाता। भूख से विकल होकर वह कांपते हाथों से टोकर बजाता तो घर का कोई सदस्य अनिच्छापूर्वक बाड़े में जाता और एक पात्र में रूखी रोटियां डाल देता। कुछ दिन तक क्रम चलता रहा। एक दिन उस वृद्ध के पौत्र ने कौतूहलवश बाड़े में झांका। उसने देखा दादाजी दयनीय अवस्था में एक टूटी चारपाई पर पड़े कराह रहे हैं। वह बच्चा बाड़े के भीतर गया, दादा से सारी बात पूछी। वहां मिट्टी के कुछ जूठे ठीकरे पड़े हुए थे। वह उन्हें उठा लाया और अपने कमरे के बाहर रख दिया। बच्चे के पिता ने उन्हें देखा तो पूछा, इन्हें यहां लाकर क्यों रखा है?

बच्चे ने जवाब दिया, आपके लिए। एक दिन जब आपको हम जानवरों के बाड़े में डाल देंगे तो खाना देने के लिए इन ठीकरों की जरूरत पड़ेगी। हम उसका पहले से प्रबंध कर रहे हैं। पिता बेटे का यह उत्तर सुनकर सन्न रह गया। वह बाड़े में गया और पिता को घर में ले आया।

हर व्यक्ति को यह सोचना है कि उसके द्वारा डाली गई परम्परा का पालन अगली पीढ़ी करेगी, इसलिए ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिए, जो स्वयं को अप्रिय लगे। उपेक्षा की तो आपकी भी एक दिन उपेक्षा जरूर होगी।

सबसे पहले इंसान बनो

दीनदयाल नाम का एक ग्रामीण था। एक बार उसके गांव में एक संतश्री का आगमन हुआ। दीनदयाल भी उनका प्रवचन सुनने गया। वह संत के प्रवचन से बहुत प्रभावित हुआ। उसने सोचा वह भी जीवन के रहस्यों की खोज करेगा और इसके लिए वह संत के पदचिह्नों पर चलेगा। कई सालों तक वह संत की भांति वेश बनाए घूमता रहा और उनकी तरह ही व्यवहार करता रहा। लेकिन उसमें कोई परिवर्तन नहीं आया और ना ही उसे जीवन का रहस्य मिला। इस बात से वह बहुत दुःखी हो गया। एक रात उसके सपने में ईश्वर आए।

ईश्वर ने उससे पूछा– दीनदयाल, तुम इतने दुखी क्यों हो?' दीनदयाल ने कहा– प्रभु, मैं बूढ़ा हो चुका हूं। लेकिन अब तक मुझे जीवन के रहस्यों का पता नहीं चला। मैं संत की तरह नहीं बन पाया। ईश्वर ने कहा– हर मनुष्य की अपनी पहचान होती है। तुम दीनदयाल बन कर जिए होते तो, अब तक कुछ नया हासिल कर चुके होते, लेकिन तुमने अपना पूरा जीवन संत की तरह बनने में गुजार दिया। जब तुम मेरे पास आते, तो मैं तुमसे यह नहीं पूछता कि तुम कितने अच्छे संत बने बल्कि मैं यह पूछता कि तुम कितने अच्छे मनुष्य बने। संत बनना छोड़ो और अच्छे इंसान बनने का प्रयास करो।

स्वमूल्यांकन

एक छोटा बच्चा एक बड़ी दुकान पर लगे टेलीफोन बूथ पर जाता हैं और मालिक से छुट्टे पैसे लेकर एक नंबर डायल करता हैं। दुकान का मालिक उस लड़के को ध्यान से देखते हुए उसकी बातचीत पर ध्यान देता है। लड़का– मैडम क्या आप मुझे अपने बगीचे की साफ सफाई का काम देंगी? औरत– (दूसरी तरफ से) नहीं, मैंने एक दूसरे लड़के को अपने बगीचे का काम देखने के लिए रख लिया हैं। लड़का– मैडम मैं आपके बगीचे का काम उस लड़के से आधे वेतन में करने को तैयार हूँ! औरत– मगर जो लड़का मेरे बगीचे का काम कर रहा हैं उससे मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ लड़का– (और ज्यादा विनती करते हुए) मैडम, मैं आपके घर की सफाई भी फ्री में कर दिया करूँगा!! औरत– माफ करना मुझे फिर भी जरुरत नहीं हैं धन्यवाद।

लड़के के चेहरे पर एक मुसकान उभरी और उसने फोन का रिसीवर रख दिया। दुकान का मालिक जो छोटे लड़के की बात बहुत ध्यान से सुन रहा था। वह लड़के के पास आया और बोला– बेटा मैं तुम्हारी लगन और व्यवहार से बहुत खुश हूँ, मैं तुम्हे अपने स्टोर में नौकरी दे सकता हूँ। लड़का– नहीं सर, मुझे जॉब की जरुरत नहीं हैं । आपका धन्यवाद।

दुकान मालिक– (आश्चर्य से) अरे, अभी तो तुम उस लेडी से जॉब के लिए इतनी विनती कर रहे थे।

लड़का– नहीं सर, मैं अपना काम ठीक से कर रहा हूँ कि नहीं बस मैं ये चेक कर रहा था, मैं जिससे बात कर रहा था, उन्ही के यहाँ पर जॉब करता हूँ। बस में तो अपने काम का स्वमूल्यांकन कर रहा था।

आपके अपने संस्थान की शाखाएं

पाली/जोधपुर (राज.)
श्री कान्तिलाल मूथा,मो. 07014349307
31, गुलजार चौक, पाली मारवाड़ (राज.)

भीलवाड़ा(राज.)
श्री शिव नारायण अग्रवाल,मो. 09829769960
C/o नीलकण्ठ पेपर स्टोर, L.N.T. रोड़,
भीलवाड़ा-311001 (राज.)

चुरु(राज.)
श्री गोरधन शर्मा,मो. 9588913301,गाँव व पोस्ट
- झोथड़ा, त. तारानगर, चुरू-331304 (राज.)

सुमेरपुर (राज.)
श्री गणेश मल विश्वकर्मा,मो. 09549503282
अंचल फाउण्डरी, स्टेशन रोड़, सुमेरपुर, पाली

बहरोड़(राज.)
डॉ. अरविन्द गोस्वामी,मो. 9887488363
'गोस्वामी सदन' पुराने हॉस्पीटल के सामने
बहरोड़, अलवर (राज.)
श्री भुवनेश रोहिल्ला,मो. 8952859514,
लेडिज फैशन पोईन्ट, न्यू बस स्टैण्ड के सामने
यादव धर्मशाला के पास, बहरोड़, अलवर (राज.)

अलवर (राज.)
श्री आर.एस. वर्मा,मो.-09024749075,
के.वी. पब्लिक स्कूल,
35 लादिया,बाग अलवर (राज.)

जयपुर (राज.)
श्री नन्द किशोर बत्रा,मो. 09828242497
5-C, उन्नति एन्क्लेव, शिवपुरी, कालवाड़ रोड़,
झोटवाड़ा, जयपुर 302012 (राजस्थान)

अजमेर(राज.)
श्री सत्य नारायण कुमावत
मो. 9166190962,कुमावत कॉलोनी,
आर्य समाज के पीछे, मदनगंज,किशनगढ़,
जिला अजमेर (राज.)

बूंदी(राज.)
श्री गिरिधर गोपाल गुप्ता,मो. 9829960811,
ए.14, 'गिरधर-धाम', न्यू मानसरोवर कॉलोनी
चित्तौड़ रोड़, बून्दी (राज.)

मन्दसौर (म.प्र.)
श्री मनोहर सिंह देवड़ा
मो. 9753810864,म.नं. 153, वार्ड नं. 6,
ग्राम-गुराड़िया,पोस्ट-गुराड़ियादेदा,
जिला - मन्दसौर (मध्यप्रदेश)

भोपाल(म.प्र.)
श्री विष्णु शरण सक्सेना,मो. 09425050136
A-3/302, विष्णु हाईटेक सिटी, अहमदपुर
रेल्वे क्रोसिंग के सामने, बावड़िया कलाँ,
होशंगाबाद रोड़ जिला - भोपाल (म.प्र.)

कैथल (हरियाणा)
डॉ. विवेक गर्ग,मो. 9996990807,गर्ग
मनोरोग एवं दांतो का हस्पताल के अन्दर
पद्मा मॉल के सामने करनाल रोड़, कैथल

सिरसा(हरियाणा)
श्री सतीश मेहता मो. 9728300055
म.न.-705, से.-20,पार्ट-द्वितीय,सिरसा, हरि.

जुलाना मण्डी(हरियाणा)
श्रीराम निवास जिन्दल,
श्री मनोज जिन्दल मो. 9813707878,108
अनाज मण्डी, जुलाना,जींद (हरियाणा)

पलवल(हरियाणा)
श्री वीर सिंह चौहान मो.9991500251
विला नं. 228, ओमेक्स सिटी,
सेक्टर-14, पलवल (हरि.)

नरवाना(हरियाणा)
श्री धर्मपाल गर्ग,मो.-09466442702,
श्री राजेन्द्र पाल गर्ग मो.-9728941014
165-हाऊसिंग बोर्ड कॉलोनी नरवाना,जीन्द

फरीदाबाद(हरियाणा)
श्री नवल किशोर गुप्ता मो. 09873722657
कश्मीर स्टेशनरी स्टोर, दुकान नं. 1डी/12,
एन.आई.टी., फरीदाबाद, हरियाणा

करनाल (हरियाणा)
श्री सतीश शर्मा,मो. 09416121278
म.नं. 886, सेक्टर-7, अरबन एस्टेट
करनाल (हरियाणा)

अम्बाला केन्ट (हरियाणा)
श्री मुकुट बिहारी कपूर ,मो. 08929930548
मकान नं.- 3791, ओल्ड सब्जी मण्डी, अम्बाला
केन्ट, अम्बाला केन्ट-133001(हरियाणा)

कैथल(हरियाणा)
श्री सतपाल मंगला,मो. 09812003662-3
68-ए, नई अनाज मंडी, कैथल

उज्जैन (म.प्र.)
श्री गुलाब सिंह चौहान
मो. 09981738805
गाँव एवं पोस्ट - इन्गोरिया,
जिला - उज्जैन (म.प्र.) 456222

रतलाम (म.प्र.)
श्री चन्द्र पाल गुप्ता
मो. 9752492233,मकान नं. 344,
काटजूनगर, रतलाम (म.प्र.)

जबलपुर(म.प्र.)
श्री आर. के. तिवारी,मो. 9826648133
मकान नं. 133, गली नं. 2, समदड़िया ग्रीन
सिटी,माधोतल, जिला - जबलपुर (म.प्र.)

आकोला (महाराष्ट्र)
श्री हरिश जी, मो.नं. - 9422939767
आकोट मोटर स्टेण्ड, आकोला (महाराष्ट्र)

परभणी (महाराष्ट्र)
श्रीमती मंजु दरड़ा-मो. 09422876343

नांदेड़(महाराष्ट्र)
श्री विनोद लिंबा राठोड,07719966739
जय भवानी पेट्रोलियम,मु. पो. सारखानी,
किनवट, जिला - नांदेड़, महाराष्ट्र

पाचोरा (महाराष्ट्र)
श्री सीताराम जी-मो. 9422775375

मुम्बई(महाराष्ट्र)
श्रीमती रानी दुलानी,न.-028847991
9029643708,10-बी/बी, वाईसराय
पार्क,ठाकुर विलेज कान्दीवली,मुम्बई

श्री प्रेम सागर गुप्ता ,मो. 9323101733
सी-5, राजविला, बी.पी.एस. 2
क्रोस रोड़,वेस्ट मुलुंड, मुम्बई

हजारीबाग(झारखण्ड)
श्री डूंगरमल जैन,मो.-09113733141
C/o पारस फूड्स, अखण्ड ज्योति ज्ञान केन्द्र,
मेन रोड़ सदर थाना गली,
हजारीबाग (झारखण्ड)

धनबाद(झारखण्ड)
श्री भगवानदास गुप्ता-09234894171
07677373093 गांव-नापो खुर्द,पो.-
गोसाई बलिया,जिला-हजारीबाग (झारखण्ड)

रामगढ़(झारखण्ड)
श्री जोगिन्दर सिंह जग्गी,मो. 7992262641,
44ए, छोटकी पुरीम, नजदीक उमा इन्सीट्यूट
राजीव सिनेमा रोड़, बिजुलिया, रामगढ़ (झारखण्ड)

डोडा (झारखण्ड)
श्री विक्रम सिंह व नीलम जी कोतवाल
मो. 09419175813, 08082024587
ग्वाड़ी, उदराना, त. भद्रवा, डोडा (ज.क.)

हमीरपुर (हिमाचल प्रदेश)
श्री ज्ञानचन्द शर्मा,मो. 09418419030
गाँव व पोस्ट - बिघरी, त. बदसर
जिला हमीरपुर - 176040 (हिमाचलप्रदेश)

श्री रसील सिंह मनकोटिया
मो. 09418061161
जामलीधाम, पोस्ट-रोपा, जिला-हमीरपुर-177001

शाहदरा शाखा
श्री विशाल अरोड़ा-8447154011
श्रीमान रविशंकर जी अरोड़ा-9810774473
मैसर्स शालीमार ड्राइक्लीनर्स
IV/1461 गली नं. 2 शालीमार पार्क,
D.C.B. ऑफिस के पास,शाहदरा,ईस्ट दिल्ली

मथुरा(उ.प्र.)
श्री दिलीप जी वर्मा
मो. 08899366480
1, द्वारिकापुरी,कंकाली, मथुरा (उ.प्र.)

बरेली (उ.प्र.)
श्री कुंवरपाल सिंह पुंढीर
मो. 9458681074,विकास पब्लिक
स्कूल के पीछे, स्वरूप नगर (चहवाई)
जिला - बरेली- (उ.प्र.)

भदोही(उ.प्र.)
श्री अनूप कुमार बरनवाल, मो.7668765141,शिव मन्दिर के
पास, मैन मार्केट, खमरिया, जिला भदोही, (उ.प्र.) 221306

हाथरस (उ.प्र.)
श्री दास बृजेन्द,मो.-09720890047
दीनकुटी सत्संग भवन,सादाबाद

बरेली(उ.प्र.)
श्री विजय नारायण शुक्ला
मो. 7060909449,मकान नं.22/10,
सी.बी.गंज, लेबर इण्डस्टीयल कॉलोनी
बरैली (उ.प्र.)

हापुड़ (उ.प्र.)
श्री मनोज कंसल मो.-09927001112,
डिलाइट टैन्ट हाऊस,कबाड़ी बाजार,हापुड़

दीपका, कोरबा (छ.ग.)
श्री सूरजमल अग्रवाल,मो. 09425536801

श्री देवनाथ साहू,मो. 09229429407
गांव- बेला कछार, मु.पो. बालको
नगर, जिला-कोरबा (छ.ग.)

बिलासपुर(छ.ग.)
डॉ. योगेश गुप्ता,मो.-09827954009
श्रीमन्दिर के पास, रिंग रोड़ नं. 2,
शान्ति नगर, बिलासपुर (छ.ग.)

बालोद (छ.ग.)
श्री बाबूलाल संजयकुमार जैन
मो. 9425525000,रामदेव चौक
बालोद, जिला-बालोद (छ.ग.)

खरसिया(छ.ग.)
श्री बजरंग बंसल,मो.-09329817446
शान्ति ड्रेसेज, नियर चन्दन तालाब
शनि मन्दिर के पास,खरसिया (छ.ग.)

जम्मू
श्री जगदीश राज गुप्ता,मो.-09419200395
गुरू आशीर्वाद कुटीर, 52-सी
अपर शिव शक्ति नगर जम्मु-180001

सम्पादकीय

ईश्वर सबका सृष्टा है। उसके सृजन में यों तो पूर्णता होती है किन्तु कभी–कभी किसी कारणवश कोई व्यक्ति अभाववाला जन्म जाता है। यह अभाव अंगों की न्यूनता, शारीरिक क्षमता की कमी, मानसिक विकास की कचावट या अन्य कोई भी हो सकती है। शायद ईश्वर यह सोचता होगा कि जिन मनुष्यों के पास सर्वांगता है, सर्वक्षमता है तथा सर्वसुलभता है वे इस कमी को पूरा कर देंगे। यह सोचकर परमात्मा निश्चिंत हो जाता होगा। उसे अपने समर्थ पुत्रों पर पूर्ण विश्वास है तथा अपेक्षा भी। हम अधिकतर समर्थ संतानें हैं प्रभु की। हमारा परम कर्तव्य है कि जो दिव्यांग है, मन्दबुद्धि है या भौतिक साधनों की सुविधाओं से वंचित है, उसकी यथाशक्ति पूर्ति करें। यह सेवा का कार्य परमात्मा के कार्य में सीधा सहयोग है तथा उनकी अपेक्षा पर खरा उतरने का अवसर भी है। हम सभी इस भावना को मन में बैठा लें तो कोई भी पीड़ित न रहेगा, कोई भी उपेक्षित नहीं होगा और किसी को भी अभावों से जूझना नहीं पड़ेगा। इसे ही शास्त्रज्ञों ने कहा है– नर सेवा, नारायण सेवा।

कुछ काव्यमय

सेवा तो कर्तव्य है,
ना कोई अहसान।
सेवाहित प्रभु ने किये,
धरती पर इंसान।।
सेवा है इक भावना,
मन की एक हिलोर।
सेवा प्रभु से मिलन है,
उनसे बंधी डोर।।
दया, धर्म, करुणा करे,
सब सेवा में लीन।
हर कोई सेवा करे,
कौन रहेगा दीन।।
सेवा करने के लिए,
ना मुहूर्त को देख।
हर मानव के हाथ में,
निर्मित सेवा रेख।।
सेवा के सद्कार्य को,
कल पर कभी न टाल।
हो सकता होवे नहीं,
मन में रहे मलाल।।

- वख्तीचन्द राव, अतिथि सम्पादक

अपनों से अपनी बात

पल की खबर नहीं पीढियों की फिक्र

एक साहूकार के पास बहुत ज्यादा धन था। वह इसमें और इजाफा करने में ही लगा रहता। एक दिन उसने अपने मुनीम को बुलाया और उससे कुल जमा धन के बारे में पूछा। मुनीम बोला–'महाशय, आपकी दस पीढ़ियां उपयोग करें भी तो भी शायद खत्म न हो। इस पर साहूकार बोला –अरे, भाई तो आज से ही सतर्क हो जाओ, उससे आगे की पीढियों के इन्तजाम में लगो। मुनीम को आश्चर्य हुआ कि दस पीढ़ियों के लिए जमा धन से भी इसे सन्तोष नहीं है। मुनीम समझदार था। धर्म–कर्म और सत्संग में उसकी रूचि थी। उसने कहा–'सेठजी ! यदि आप जमा धन में से कुछ परोपकार के लिए खर्च करें तो धन की आवक स्वतः बढ़ जाएगी। सेठ ने कहा –'अरे, मूर्ख ! खर्च से धन घटेगा, बढ़ेगा कैसे ? मुनीम ने कहा –'मेरा कहा करके तो देखिये। साहूकार ने कहा – अच्छा तुम ही बताओ, क्या परोपकार करूं ? मुनीम बोला – पास ही गली में एक बूढ़ी माँ रहती है, चलने–फिरने में अशक्त है, उसे गुजारे लायक आटा–दाल भिजवाते रहिए। साहूकार दूसरे दिन सुबह आटा–दाल मिर्च–मसाला से भरे दो थैले लेकर बुढ़िया के पास पहुंचा। बुढिया सन्तोषी थी, उसने कहा जरा ठहरिये। वह उठी और पास पड़े एक मटके का ढक्कन उठाकर देखा। बाद में बोली –आपका धन्यवाद !

लेकिन अभी मैं यह सामग्री नहीं ले सकती, मेरे पास एक–दो दिन का आटा–दाल पर्याप्त है। यह खत्म होने पर वही प्रभु फिर भेज देगा, जिसने पहले भेजा। कल की चिंता क्यों की जाए। बूढ़ी मां यह बात सुनकर साहूकार की आँखें खुल गई। उसे ज्ञान हो गया कि मैं जहां अपनी ग्यारहवीं पीढ़ी के लिए धन जमा करने की फिक्र में हूँ, वहीं इस गरीब बुढ़िया को कल की भी चिन्ता नहीं। इतना ज्ञान होने पर उसने अपना काफी सारा धन दीन–दुखियों, निराश्रितों व अपाहिजों की जरूरत पूरी करने में लगा दिया।

बंधुओं ! इस प्रसंग से हमें सन्तोषी और परोपकारी बनने की प्रेरणा मिलती है। किसी दुःखी का दुःख दूर करने से जो सन्तोष प्राप्त होगा, वही अक्षय धन है। उससे जन्म –जन्मान्तर सफल हो जाएंगें। जीवन वही सार्थक है, जिसमें परोपकार की भावना हो। इसके लिए भी तभी प्रेरित हुआ जा सकता है, जब व्यक्ति प्राणिमात्र के प्रति आत्मवत् हो। परोपकार के उद्देश्य से ही वृक्ष फलते हैं और नदियों में निर्मल जल का निरन्तर प्रवाह होता है। क्या हम जीवन में अपने द्रव्य, साधनों व सामर्थ्य का ऐसा ही सदुपयोग कर रहे हैं ? क्या अर्जित धन व्यर्थ और आडम्बर के कार्यों में तो खर्च नहीं हो रहा ? क्या हम अपने धन और सामर्थ्य से मानवता की नींव को मजबूती दे पा रहे हैं ? ये ऐसे कुछ प्रश्न हैं, जिन पर हमें चिन्तन करना चाहिए। क्योंकि यदि हमारा पड़ोसी दुःखी है तो हमें सुख का अनुभव कैसे हो पायेगा ? हमारे पास प्रभु कृपा से जो कुछ भी अपनी जरूरत से ज्यादा है, उसके होने का अर्थ क्या है ? इस पर अवश्य विचार करें। जमा पूंजी के चक्कर में न पड़कर अपने लिए पुण्य का संचय करते हुए सुखी, आनन्दमय और परोपकारी जीवन जीने का प्रयत्न करें।

– कैलाश 'मानव'

सपना पूरा करने के जिद

कभी–कभी ऐसा भी होता है कि व्यक्ति कठिन परिश्रम कर लक्ष्य तक पहुँचने वाला ही होता है कि कोई घटना–दुर्घटना उससे उसका सपना छीन लेती है, लेकिन जुलियो ने साबित किया कि मन यदि में लग्न और उत्साह हो तो कोई बाधा शिखर तक पहुँचने में रोड़ा बन सकती।

23 सितम्बर, 1943 को जन्मे जुलियो इग्लेसियस का बचपन से अपने पसंदीदा क्लब–रियल मेड्रिड की तरफ से फुटबॉल खेलने का सपना था। अभ्यास करते–करते वे अच्छे गोलकीपर बन गये। 20 वर्ष की उम्र तक आते–आते उनका सपना साकार होने के आसार बनने लगे। एक दिन उन्हें रियल मैड्रिड से खेलने के लिए अनुबंधित भी कर लिया गया। फुटबॉल के अनेक दिग्गज यह मान कर चल रहे थे कि जुलियो शीघ्र ही स्पेन के पहले दर्जे के गोलकीपर बन जाएंगे। 1963 की एक शाम को हुई भयानक कार–दुर्घटना ने जुलियो की जिन्दगी को पूरी तरह बदल कर रख दिया। रियल मेड्रिड और स्पेन का नंबर वन गोलकीपर बनने वाले जुलियो अस्पताल में थे।

उनकी कमर से नीचे का हिस्सा पूरी तरह लकवाग्रस्त हो गया। जुलियो फिर कभी चल पाएँगे अथवा नहीं, इसके बारे में शंका थी। जुलियो जीवन से निराश हो चुके थे। 8 माह बिस्तर पर रहने वाले जुलियो की जिन्दगी तब फिर से पटरी पर लौटने लगी जब उन्हें एक नर्स ने गिटार भेंट किया। जुलियो ने गाने, कविताएँ लिखने के साथ गिटार बजाना और गाना सीखा। उसके पश्चात्, उन्होंने एक संगीत प्रतियोगिता में भाग लिया तथा शानदार गीत गाकर प्रथम पुरस्कार जीता। आज वे विश्व के जाने माने गीतकार, संगीतकार, गायक और गिटार वादक हैं।

बंधुओं ! सपना पूरा नहीं हो पाने पर निराश होने की आवश्यकता नहीं, जीवन में आपके लिए अभी भी बहुत–कुछ बचा हुआ है। उसे हासिल करने की जिद को जारी रखिए।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

चित्र लेने के बाद अल्पाहार कार्यक्रम था। कैलाश इस अवसर का लाभ उठाते हुए दिग्गज हस्तियों से मिल रहा था। वह अपने सेवा कार्यो के चित्रों की एलबम सदा जेब में रखता था। इन एलबमों ने समय समय पर उसकी खूब मदद की थी। वह किसी से भी मिलता, अपना परिचय देते हुए झट से उसके आगे ये एलबमें रख देता। वह एक तरह से अपना ही चलता फिरता पी. आर. ओ. था। लोग उसके इन उपक्रमों का उपहास करते थे मगर वह किसी की चिन्ता नहीं करता था।

यहां भी वह एक दिग्गज हस्ती का एलबम दिखा रहा था तभी पीछे से उसने किसी को मानव जी, मानव जी पुकारते सुना। उसने घूम कर देखा तो उसे अपनी किस्मत पर यकीन नहीं हुआ। आवाज देने वाले और कोई नहीं वरन् देश के प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह थे। कैलाश तुरन्त उनकी तरफ मुड़ा और अभिवादन किया, मनमोहन सिंह प्रसन्न होकर उससे मिले और बोले – मैं अक्सर आपको टी.वी. पर देखा करता हूं, आप बहुत अच्छा कार्य कर रहे हैं। कैलाश के हाथ में चित्रों की एलबम थी ही, उसने यह एलबम प्रधानमंत्री को दे दी। इसी बीच कई फोटोग्राफर तथा मीडियाकर्मी भी एकत्र हो गये। डॉ. आर. के अग्रवाल भी उसके साथ वहां उपस्थित थे। उसने उन्हें भी अपने साथ बुला लिया। प्रधानमंत्री से मिलने कई लोग उत्सुक थे, सबने उन्हें घेर लिया तो कैलाश एलबम ले एक तरफ हट गया। कार्यक्रम आधा – पौने घन्टे चला, इस दौरान कई लोगों से परिचय आदान – प्रदान करने का अवसर मिला।

अंश-230

दही खाने के हैं ये जबरदस्त फायदें

अधिकतर लोगों की डाइट का दही एक महत्वपूर्ण हिस्सा होता हैं। दहीं में काफी पोषक तत्व होते हैं। रोज दहीं खाने से न केवल आप तरोताजा रहते हैं बल्कि इससे पाचन तंत्र भी ठीक रहता है और पेट से जुड़ी समस्या भी नहीं होती। ऑस्टियोपोरोसिस, ब्लड प्रेशर, बालों और हड्डियों के लिए भी दही कई तरह से फायदेमंद है। दही प्रोटीन, कैल्शियम, राइबोलेविन, विटामिन जैसे पोषक तत्वों से समृद्ध होता है।

खाने के साथ दही खाने के फायदे

खाने के साथ दही खाने के कई फायदे हैं। इससे न सिर्फ खाने का स्वाद बढ़ता है बल्कि इससे आपकी पाचन शक्ति भी मजबूत बनती है। आप अगर खाने के बाद चीनी या गुड़ डालकर दही खाते हैं, तो इससें आपकी बॉडी से टॉक्सिक यूरिन के माध्यम से बाहर निकल जाते हैं।

दही के फायदे

- रोज दही खाने से हाई ब्लड प्रेशर का खतरा काफी हद तक कम होता है। वहीं दिल से जुड़ी बीमारियों को दूर रखने में भी उपयोगी होता है।
- दही को आप सीधे बालों और त्वचा पर लगा सकते हैं और बहुत ही जल्दी इसके अच्छे परिणाम देख सकते हैं। डैंड्रफ से बचने के लिए बालों में दहीं लगाना बेहद अच्छा रहता हैं। इसके लिए दही लगाना बेहद अच्छा लगता है। इसके लिए दही को बालों में लगाकर आधे घंटे के बाद बाल धो लें।

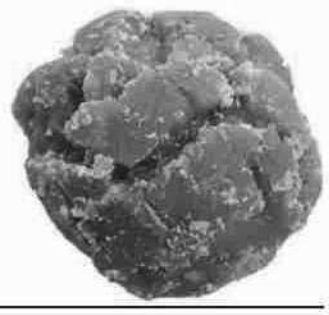

- दही फैट की अच्छी फॉर्म है। दही में दूध के बराबर ही पोषक तत्व होते है। दही में कैल्शियम भरपूर मात्रा में होता है। दही खाने से दांत और हड्डियां तो मजबूत होती ही हैं, साथ में ऑस्टियोपोरोसिस का खतरा भी कम होता है।

अनुभव अमृतम्

वक्रतुण्ड महाकाय, सूर्यकोटि समप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव, सर्वकार्येषु सर्वदा।।

भैया–माताओं –बहनों, बन्धुओं– देखिये ये जीवन एक आनन्द है। कहीं खुशियाँ, कहीं हर्षितता, कहते है मेरा मन मुक्त हो गया। आज मैं बहुत खुश, आज मैं बहुत हर्षित हूँ। ये हर्षित व्यक्ति ना बाहरी परिस्थितियों से होता है– बाबूजी। घर बाहर नहीं होता। बाहरी परिस्थितियों तो प्रतिक्षण आती रहेगी। जब से जन्म लिया बाहर आये, नाल कटी, और हमें हवा चाहिए। वास्तव में हवा चाहिए। अब तक तो माता के गर्भ में हमारा पोषण होता था। जो माता हवा लेती थी पानी पीती थी, माता भोजन करती थी, दूध पीती थी। उसी से हमारा सारा पोषण होता था। अंग बन जाते थे। पाँच तत्त्व है वायु, जल, आकाश, अग्नि और पृथ्वी कहते पंचतत्त्व का शरीर है। लेकिन कौनसा तत्त्व कितनी मात्रा में शरीर में चाहिए? इसका निर्धारण हम नहीं करते, कोई नहीं करता– सिर्फ परमात्मा। कोई बड़ी कुदरत, बड़ा नियम, महान् ईश्वर सर्वज्ञ कौनसा तत्त्व कितना चाहिए? देह– देवालय में 70 प्रतिशत जल चाहिए। पृथ्वी तत्त्व कितना चाहिए? भारीपन, हल्कापन चाहिए। अग्नि तत्त्व ऊर्जा चाहिए शरीर में, आकाश तत्त्व तो शून्य है। आकाश तत्त्व है परन्तु आकाश की अनूभुति निर्वाण के बाद होती है। जब परदेशी तो हुआ रवाना, प्यारी काया पड़ी रही, तो फिर आकाश तत्त्व अभी मैं जब सोचता हूँ मेरा जन्मस्थल भीण्डर, मेरा विद्यालय भीण्डर भैरव हाई स्कूल। मुझे लगता है आठवीं का बोर्ड था उस समय, और नवीं की परीक्षा दे दी। पूरे जीवनकाल में रिजल्ट क्या आयेगा? इसकी चिंता जो वो मेरे को केवल नाईट में लगी। न बाद में कभी लगी न पहले लगी। नवीं में रिजल्ट आने के बाद होता है, परीक्षा के बाद का प्रतिदिन विचार आता था। नम्बर कितने आयेंगे?

सेवा ईश्वरीय उपहार– 110 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity
| 2021 महाकुम्भ हरिद्वार

21 दिवस करवाएं संत भोजन सेवा

5 ऑपरेशन का करें सहयोग

5 कृत्रिम अंगों का करें सहयोग

सहयोग राशि ₹100000

Bank Name: State Bank of India
Account Name: Narayan Seva Sansthan
Account Number :31505501196
IFSC Code : SBIN0011406
Branch: Hiran Magri, Sector No.4, Udaipur-313001

Paytm | UPI yono SBI | SBI Payments
UPI Address for Indian donors which is narayanseva@SBI

+91 294 662 2222 | +91 7023509999
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

'मन के जीते जीत सदा' दैनिक समाचार-पत्र अब ऑनलाईन साईट पर भी उपलब्ध है
www.narayanseva.org, www.mannkijeet.com
: kailashmanav

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) 313002
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
• सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. RAJHIN/2014/59353 • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023